[A-11] No. of printed page: 1

**SARDAR PATEL UNIVERSITY**
**M.A. Previous (External) Examination**
**Wednesday, 1 April 2015**
**2.30 - 5.30 pm**
**HIN 403 - Hindi Paper III**
**आधुनिक गद्य साहित्य**

**Total Marks: 100**

प्र.१ निम्न में से **किन्हीं दो** की ससंदर्भ व्याख्या प्रस्तुत कीजिए । (२०)

(क) ''अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है । अपने नियामक और कर्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार करातीं है ।''

**अथवा**

(क) ''मैं अनुभव करता हूँ कि ग्राम-प्रान्तर मेरी वास्तविक भूमि है । मैं कई सूत्रों से इस भूमि से जुड़ा हूँ । उन सूत्रों में तुम हो, यह आकाश है, ये मेघ हैं, यहाँ की हरियाली है, हरिणों के बच्चे हैं, पशुपाल हैं ।.... यहाँ से जाकर मैं अपनी भूमि से उखड़ जाऊँगा ।''

(ब) ''तुम किसी कर्म को पाप नहीं कह सकते, वह अपने नग्न रूप में पूर्ण है, पवित्र है । संसार ही युद्ध क्षेत्र है, इसमें पराजित होकर शस्त्र अर्चन करके जीने से क्या लाभ ? तुम युद्ध में हत्या करना धर्म समझते हो, पर दूसरे स्थल पर अधर्म ?''

**अथवा**

(ब) ''समय निर्दय नहीं है । उसने औरों को भी सत्ता दी है । अधिकार दिये हैं । वह धूप और नैवेद्य लिए घर की देहली पर रूका नहीं रहा । उस ने औरों को अवसर दिया है । निर्माण किया है ।....तुम्हें उसके निर्माण से वितृष्णा होती है, क्योंकि तुम जहाँ अपने को देखना चाहते हों, देख नहीं पा रहे हो ।''

प्र.२ 'गोदान' को आधुनिक काल का महाकाव्य क्यों कहा जाता है ?'' स्पष्ट कीजिए । (२०)

**अथवा**

प्र.२ उपन्यास तत्त्वों के आधार पर 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास की आलोचना कीजिए ।

प्र.३ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्ध कला पर प्रकाश डालिए । (२०)

**अथवा**

प्र.३ हरिशंकर परसाई कृत ''विकलांग श्रद्धा का दौर'' निबन्ध के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए ।

प्र.४ कहानी तत्त्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की आलोचना कीजिए । (२०)

**अथवा**

प्र.४ 'पथ के साथी' के किसी भी एक रेखाचित्र को समझाइए ।

प्र.५ **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (२०)

(१) जयशंकर प्रसाद कृत 'स्कन्दगुप्त' (२) नाटककार शंकर शेष
(३) निबन्धकार विद्यानिवास मिश्र (४) उपन्यासकार जैनेन्द्र

* * *